

प्रलिमिंस फैक्ट्स: 27 अक्टूबर, 2020

- [कोच्चि-मुज़रिसि बरिनेल](#)
- [भारत-ऑस्ट्रेलिया सर्कुलर इकोनामी हैकथॉन](#)
- [प्रोजेक्ट-37](#)

कोच्चि-मुज़रिसि बरिनेल

Kochi Biennale

केरल में प्रचलित महामारी के कारण कोच्चि-मुज़रिसि बरिनेल के पांचवें संस्करण को अगले वर्ष हेतु स्थगित कर दिया गया है। [//](#)



- यह अंतरराष्ट्रीय कला प्रदर्शनी पहले 12 दिसंबर से आयोजित होने वाली थी।
- कोच्चि बरिनेल फाउंडेशन ने सूचित किया है कि एक्सपो को स्थगित करने का निर्णय राज्य में महामारी के चलते लिया गया है।

कोच्चि-मुज़रिसि बरिनेल

- कोच्चि-मुज़रिसि बरिनेल भारत का पहला द्विवार्षिक बरिनेल है, जो वेनिस बरिनेल जैसी प्रसिद्ध कला उत्सवों से प्रेरित है तथा दुनिया की नई कलात्मक प्रथाओं को प्रदर्शित करने के लिये एक मंच प्रदान करता है।
- राज्य सरकार और कुछ व्यवसायों के सहयोग से कोच्चि बरिनेल फाउंडेशन वर्ष 2012 से इस महोत्सव की मेज़बानी कर रहा है।

उद्देश्य

- वसुधैव कुटुंबकम और आधुनिकता की भावना का विकास करना जो कि कोच्चि के जीवंत अनुभव में नहित है।
- केरल में सार्वजनिक कार्रवाई और सार्वजनिक चित्रकारी की समृद्ध परंपरा को आगे बढ़ाते हुए इसे भारत में कलात्मक व्यवसाय के एक केंद्र के रूप में स्थापित करना।
- भारतीय लोगों के नए आत्मविश्वास को प्रतबिंबित करना, जो धीरे-धीरे, लेकिन निश्चित रूप से, एक नए समाज का निर्माण कर रहे हैं जिसका उद्देश्य उदार, समावेशी, समतावादी और लोकतांत्रिक होना है।
- भारत की अतीत और वर्तमान कलात्मक परंपराओं में नहित अप्रकट ऊर्जाओं का पता लगाना तथा सह-अस्तित्व और महानगरीयता की एक नई शैली का आविष्कार करना।

कोच्चि बरिनेल फाउंडेशन

- यह एक गैर-लाभकारी धर्मार्थ ट्रस्ट है जिसकी स्थापना वर्ष 2010 में बोस कृष्णामाचारी और रियास कोमू ने की थी।
- यह भारत में कला एवं संस्कृति और शैक्षिक गतिविधियों को बढ़ावा देने हेतु प्रयास करता है; उनमें से कोचिंग-मुजरिसि बरिनेल की मेजबानी प्रमुख है।
- कोचिंग बरिनेल फाउंडेशन वरिषत्ती धरोहरों, स्मारकों के संरक्षण और कला एवं संस्कृति के पारंपरिक रूपों के उत्थान में लगा हुआ है।
- यह फाउंडेशन समकालीन कला बुनयादी ढाँचे को मज़बूत करने और वविधि कार्यक्रमों के माध्यम से संपूर्ण भारत में कला के लिये सार्वजनिक पहुँच को व्यापक बनाने के लिये वर्ष भर कार्य करता है।

भारत-ऑस्ट्रेलिया सर्कुलर इकोनामी हैकथॉन

India–Australia Circular Economy Hackathon (I-ACE)

अटल इन्नोवेशन मशिन, कॉमनवेलथ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल ऑर्गेनाइज़ेशन (Commonwealth Scientific and Industrial Research Organisation- CSIRO) के साथ मलिकर सर्कुलर अर्थव्यवस्था पर दो दविसीय 'भारत-ऑस्ट्रेलिया सर्कुलर इकोनामी हैकथॉन' (India Australia Circular Economy Hackathon {I-ACE}) आयोजित करने जा रहा है। हैकथॉन का आयोजन 7 और 8 दसिंबर को कया जाएगा।



- I-ACE का वचिर इस वर्ष 4 जून को भारत और ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्रियों की बातचीत के दौरान आया जब दोनों नेताओं ने भारत और ऑस्ट्रेलिया में सर्कुलर इकोनामी को बढ़ावा देने के लिये नवाचारों की आवश्यकता जताई।
- I-ACE के अंतर्गत दोनों देशों के स्टार्टअप और MSME तथा प्रतभिवान छात्रों द्वारा नए तकनीकी उपायों के विकास और उनकी पहचान पर ध्यान केंद्रित कया जाएगा।
- शॉर्टलसिट कयि गए छात्रों और स्टार्टअप/एमएसएमई को हैकथॉन में भाग लेने के लिये आमंत्रित कया जाएगा और सभी चार वषियों में से प्रत्येक वषिय के लिये दोनों देशों से एक-एक छात्र और एक-एक स्टार्टअप/MSME को 11 दसिंबर को पुरस्कार वविरण समारोह में वजिता घोषित कया जाएगा।

प्रस्तावति दो दविसीय हैकथॉन के अंतर्गत चार मुख्य थीम हॉंगी:

1. पैकगि अपशषिट में कमी लाने हेतु कम संसाधनों द्वारा पैकगि के कषेत्र में नवाचार
2. खाने की बरबादी कम करने के लिये खाद्य आपूर्ति श्रृंखला हेतु नवाचार
3. प्लास्टिक अपशषिट को कम करने के लिये अवसरों का सृजन
4. जटलि ऊर्जा धातु और वेस्ट रीसाइकलिंग

भारत-ऑस्ट्रेलिया सर्कुलर इकोनामी हैकथॉन का महत्त्व:

- यह देखने का प्रयास है कि सर्कुलर इकोनामी की चुनौतियों को कैसे दुरुस्त कया जा सकता है, जिससे न सरिफ अपशषिट पदार्थों के नपिटान का स्थाई समाधान नकिलेगा बल्कि इससे अपशषिट पदार्थों के पुनः इस्तेमाल के तौर तरीके भी सामने आएंगे।
- भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच रचनात्मक और मज़बूत द्वपिक्षीय साझेदारी एक दशक से जारी है और वभिन्न कषेत्रों में हमारे पारस्परिक सहयोग से महत्त्वपूर्ण परिणाम सामने आए हैं।
- भारत और ऑस्ट्रेलिया साथ आकर अनुसंधान और विकास के प्रयासों को तीव्र कर सकते हैं जिससे चुनौतीपूर्ण समय से नकिला जा सके।
- सर्कुलर अर्थव्यवस्था का मॉडल बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन और उच्च आर्थिक विकास दर हासिल करने में दूरगामी परिणाम वाला होगा। इससे लागत में कमी, नवाचार में वृद्धि और उल्लेखनीय पर्यावरणीय लाभ भी प्राप्त कया जा सकेगा।
- यह कम संसाधनों से हमारी अर्थव्यवस्था को बेहतर करने और पर्यावरण के अनुकूल आर्थिक विकास सुनिश्चित करने की दशिा में एक महत्त्वपूर्ण पहल है।

ऑस्ट्रेलिया के शोध और विकास के साथ भारत के कफायती और वृहद स्तर के नवाचार कषेत्र की साझेदारी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह समय की मांग है कि हम सतत् और नए तौर तरीकों को अपनाएँ और सर्कुलर अर्थव्यवस्था की तरफ आगे बढ़ें।

प्रोजेक्ट-37

Project 37

प्रोजेक्ट-37, अरुणाचल प्रदेश सविलि सर्विसि, 2016 बैच के अधिकारियों द्वारा एक पहल है, जो राज्य के दूरदराज के ज़िलों में विकास परियोजनाओं हेतु क्राउड फंडिंग कर रहे हैं।

प्रोजेक्ट-37

- प्रोजेक्ट-37, वर्ष 2016 बैच के 37 अधिकारियों द्वारा (और नाम के बाद) समर्थति एक क्राउड फंडिंग पहल है, जिसके अंतर्गत किसी भी चीज की मरम्मत हेतु धन को एकत्रति कथिा जाएगा ।
- योजना के अनुसार, प्रत्येक बैचमेंट द्वारा मासकि आधार पर 1,500 रुपए का दान कथिा जाएगा । यह राशियोजना में शामिल व्यक्तियों के खातों से स्वतः डेबटि हो जाएंगे ।
- यह एक यादृच्छकि रोस्टर है और इसमें जीतने वाले वजिता को अपने सर्कल में धन का उपयोग करने का अवसर मलिंगा ।
- इसमें सुदूरवर्ती क्षेत्रों में माइक्रो-इन्फ्रास्ट्रक्चर का नरिमाण, शौचालय, कक्षाओं, फरनीचर आदिका नरिमाण शामिल है ।
- इसमें खमियांग जैसे क्षेत्र जो का चांगलांग के सीमावर्ती ज़िले में स्थति है - को प्राथमकिता दी जाएगी । खमियांग सर्कल म्यांमार सीमा के पास स्थति है तथा यह बहुत दुर्गम और उग्रवाद की समस्या से ग्रसति है

उद्देश्यः

- पुरानी, जर्जर इमारतों को नया रूप देना और उन्हें स्कूलों, पुस्तकालयों में परिवर्तति करना ।
- खेल के मैदान, शौचालय का नरिमाण; राज्य भर में सड़कों और साइनपोस्टों की मरम्मत ।
- गांव से एक होनहार एथलीट के लयि फंडिंग का भी प्रावधान है ।

चूँकि सविलि सेवकों को अपने क्षेत्रों के वकिस हेतु सांसदों की तरह अलग से फंडिंग नहीं की जाती है, अतः यह नवाचार उन्हें अपने क्षेत्रों में वकिस के पर्याप्त अवसर प्रदान करेगा ।

PDF Referenece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/prelims-facts-27-october-2020>

